जनता के चंदे से अनुसंधान पर बहस

एड्स का टीका खोजने का काम कई अनुसंधान समूह कर रहे हैं और ज़्यादातर काम सरकारी पैसे से या कंपनियों में चल रहा है। मगर अब एक नई परियोजना शुरू हुई है जो कोशिश कर रही है कि वह अपने अनुसंधान के लिए पैसा सीधे जनता से उगाहेगी। इम्यूनिटी प्रोजेक्ट नामक इस परियोजना के निदेशक रीड रुब्सामेन का दावा है कि वे इस तरह के फंडिंग (जिसे क्राउड फंडिंग कहते हैं) के ज़रिए जल्दी ही एड्स के खिलाफ एक टीका बना लेंगे।

कैलिफोर्निया स्थित इम्यूनिटी प्रोजेक्ट ने अपने अभियान के ज़रिए 4 लाख डॉलर से ज़्यादा राशि इकट्ठी कर ली है और एक टेक्नॉलॉजी प्रोत्साहक कंपनी ने 20 हज़ार डॉलर देने का वायदा भी कर दिया है। मगर वैज्ञानिक समुदाय में इस तरह के प्रोजेक्ट को लेकर शंका का माहौल बना हुआ है। अधिकांश वैज्ञानिकों का मत है कि फंड इकट्ठा करना अलग बात है और इस तरह के अनुसंधान के लिए ज़रूरी वैज्ञानिक संसाधन जुटाना अलग बात है। अभी तक एड्स टीके के क्षेत्र में काम कर रहे किसी प्रतिष्ठित वैज्ञानिक को इस प्रोजेक्ट में जोड़ा नहीं जा सका है।

वैसे यह रणनीति कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में काफी कारगर रही है। मगर वैज्ञानिकों का मत है कि सॉफ्टवेयर का क्षेत्र टेक्नॉलॉजी और मार्केटिंग पर ज़्यादा भरोसा करता है जबकि चिकित्सा के क्षेत्र में आपको ठोस वैज्ञानिक अनुसंधान करना होता है।

रुब्सामेन के इम्यूनिटी प्रोजेक्ट की ओर से जारी सामग्री में एड्स टीका बनाने के लिए जिस रणनीति का प्रस्ताव दिया गया है उसे लेकर भी वैज्ञानिक आश्वस्त नहीं हैं। इम्यूनिटी प्रोजेक्ट के मुताबिक वे शरीर की टी-कोशिकाओं को उकसाएंगे कि वे एड्स वायरस पर हमला करने लगें। टी-कोशिकाएं एक प्रकार की प्रतिरक्षा कोशिकाएं होती हैं।

ऐसा देखा गया है कि कुछ लोगों में एड्स वायरस पर स्वतः नियंत्रण स्थापित हो जाता है। एड्स वायरस में कुछ ऐसे खंड होते हैं जिन्हें एपिटोप कहा जाता है। कुछ लोगों में इन एपिटोप्स को निशाना बनाने की क्षमता होती है। प्रोजेक्ट का लक्ष्य इन एपिटोप्स को ढूंढकर उनके आधार पर एड्स का टीका बनाने का है। जब यह टीका किसी व्यक्ति को दिया जाएगा तो उसकी टी-कोशिकाओं में भी इन एपिटोप्स को पहचानकर नष्ट करने की क्षमता पैदा हो जाएगी।

मगर अन्य शोधकर्ताओं को इस रणनीति की सफलता में संदेह है। उनका कहना है कि जो लोग एड्स वायरस को नियंत्रण में रख पाते हैं उनके जेनेटिक बनावट में ही कुछ बात होती है। इसे अन्य लोगों में पूरी तरह दोहरा पाना संभव नहीं होगा। शोधकर्ताओं का मत है कि यह रणनीति आज़माई जा चुकी है और असफल रही है।

इससे पहले इस प्रोजेक्ट को पैसा देने से गेट्स फाउंडेशन इन्कार कर चुका है। वैज्ञानिक समुदाय को लग रहा है कि इन्यूनिटी प्रोजेक्ट द्वारा एड्स टीके को लेकर लोगों की भावनाओं का दोहन करके पैसे उगाहने की कोशिश की जा रही है। कहीं ऐसा न हो कि इसकी असफलता लोगों को आगे ऐसी शोध परियोजनाओं से दूर रहने का संदेश दे। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता **व्यक्तिगत 150 रुपए**
संस्थागत 300 रुपए